प्रो॰ सैफुद्दीन सोज़
PROF. SAIFUDDIN SOZ

सत्यमेव जयते

जल संसाधन मंत्री
भारत
श्रम शक्ति भवन
रफी अहमद किदवई मार्ग
नई दिल्ली–११०००१
MINISTER OF WATER RESOURCES
INDIA
SHRAM SHAKTI BHAWAN
RAFI AHMED KIDWAI MARG
NEW DELHI-110001

सन्देश

दिनांक : 12.09.06

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की प्रतिवर्ष हिन्दी सप्ताह के दौरान ``प्रवाहिनी `` नामक हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करता आ रहा है । इस पत्रिका में जलविज्ञान, इंजीनियरी, पर्यावरण, जल संसाधन आदि तकनीकी विषयों पर हिन्दी में लेख प्रकाशित किए जाते हैं । इससे राजभाषा के विकास के साथ-साथ तकनीकी विषयों का ज्ञान जनसाधारण तक पहुँचाना सुगम होगा ।

मैं ``प्रवाहिनी`` पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए आह्वान करता हूँ कि हमें अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिन्दी में करते हुए राजभाषा के विकास में सहयोग देना चाहिए ।

(सैफुद्दीन सोज़)

Tel. No. : 23714200, 23714663 (O), 23782032 (R), Fax : 23710804, e-mail : ssaif @ sansad.nic.in

सत्यमेव जयते

गौरी चटर्जी
सचिव
Gauri Chatterji
SECRETARY
Tel. : 23715919
Fax : 23731553

भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन,
रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001
Government of India
Ministry of Water Resources
Shram Shakti Bhawan
Rafi Marg, New Delhi-110001

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की पिछले 12 वर्षों से प्रवाहिनी नामक पत्रिका का प्रकाशन करता आ रहा है।

इस पत्रिका में सम्मिलित किये गये लेख एवं सूचनाएं जल संसाधन विकास एवं प्रबंध से जुड़े सभी विशेषज्ञों व अधिकारियों के साथ साथ जन साधारण के लिए भी लाभादायक एवं उपयोगी हैं। हिन्दी जन साधारण की भाषा है। अतः मैं चाहूंगी कि प्रवाहिनी के प्रचार एवं प्रसार में वृद्धि हो ताकि अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सकें।

इस पत्रिका का 13वां अंक हिन्दी पखवाड़े के दौरान जारी किया जा रहा है। मेरी शुभकामना है कि इस पत्रिका का निरन्तर विकास हो।

गौरी चटर्जी

(गौरी चटर्जी)

भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF WATER RESOURCES
SHARAM SHAKTI BHAVAN, NEW DELHI

संख्या 10/2/2006-हिन्दी

दिनांक : 11.9.2006

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान हिन्दी सप्ताह के दौरान अपनी वार्षिक हिन्दी पत्रिका **'प्रवाहिनी'** का प्रकाशन कर रहा है ।

'भाषा बहता नीर है' इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए प्रवाहिनी न केवल राष्ट्रीय जल संस्थान के भीतर बल्कि इसके बाहर भी राजभाषा को तथाकथित तकनीकी बंधनों को तोड़कर निर्बाध गति से प्रवाहित कर रही है। पत्रिका के गत अंकों में प्रकाशित सरल हिन्दी में लिखे गए गहन तकनीकी और वैज्ञानिक आलेखों के माध्यम से 'प्रवाहिनी' ने इस अवधारणा को पूर्णत: मिथ्या सिद्ध किया है कि तकनीकी और वैज्ञानिक विषय वस्तु हिन्दी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत नहीं की जा सकती। इस वरेण्य उपलब्धि के लिए 'प्रवाहिनी' परिवार का प्रत्येक सदस्य बधाई का पात्र है।

मुझे विश्वास है कि प्रवाहिनी में तकनीकी और विज्ञान के दुर्गम क्षेत्र में हिन्दी की जो अंत: सलिला प्रवाहित की है वह अनवरत गति से अनंत काल तक प्रवाहित होती रहेगी और यह उन अंग्रेजी प्रेमियों को जगाने और प्रेरित करने का काम भी करेगी जो अंग्रेजी के माध्यम से अपनी बात कहने में आत्म गौरव समझते रहे हैं तथा हिन्दी को एक दीन-हीन एवं अक्षम भाषा।

इस संबंध में मुझे कोई संशय नहीं कि प्रवाहिनी भविष्य में ऐसे अनेक प्रतिमान स्थापित करेगी जो अपनी मिसाल आप होंगे।

शुभकामनाओं के साथ।

के.एस. रामसुब्बन

(के.एस. रामसुब्बन)
संयुक्त सचिव (प्रशा.)

डा. कपिल देव शर्मा,
निदेशक राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान,
रूड़की।

फैक्स/Fax: Shram Shakti Bhawan 23710253, C.G.O. Complex: 24362780, 24361546, Krishi Bhawan, 23382256
Lok Nayak Bhavan 24652459 ग्राम : जल संसाधन /Gram: WATER RESOURCES

भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF WATER RESOURCES
SHARAM SHAKTI BHAVAN, NEW DELHI

संख्या 10/2/2006-हिन्दी/1708

दिनांक : 8.9.2006

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान हिन्दी सप्ताह के दौरान हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है ।

पत्रिका में जलविज्ञान, जल तथा जल संसाधन, इंजीनियरिंग, पर्यावरण, कला तथा साहित्य विषयक लेखों को शामिल किया जा रहा है। जो पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे। भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके माध्यम से भाषा जन-जन तक पहुंचती है। हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को केन्द्र की राजभाषा के रूप में अंगीकार करने का निर्णय लिया था। इसी कंड़ी में राजभाषा अधिनियम, 1963 बनाया गया। विज्ञान, प्रौधोगिकी, वाणिज्य के क्षेत्रों में हिन्दी का स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद क्रमिक विकास हुआ है।भाषा का विकास उसको व्यवहार में लाने से होता है। अत: यह आवश्यक है कि हम राजभाषा हिन्दी के विकास और प्रचार के लिए सरकारी कामकाज में हिन्दी को अपनाएँ और व्यवहार में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक न केवल हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान करेगा बल्कि कर्मचारियों की प्रतिभा को उजागर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। पत्रिका के प्रकाशन कार्य में जुड़े सभी अधिकारी/कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभ कामनाएं देती हूँ।

राजकुमारी देव

दिनांक : 8.9.2006

फैक्स/Fax: Shram Shakti Bhawan 23710253, C.G.O. Complex: 24362780, 24361546, Krishi Bhawan, 23382256
Lok Nayak Bhavan 24652459 ग्राम : जल संसाधन /Gram: WATER RESOURCES